ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—08/04/2021 प्राणी वही प्राणी है।

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

<u>प्राणी वही प्राणी है।</u>

आशा है आपने कविता को कंठस्थ कर लिया होगा ,आज आप लोग कविता के पहले पद के भावार्थ को जानेंगे। प्रस्तुत कविता में भवानी प्रसाद मिश्र ने मनुष्य को पानी के समान बनने के लिए कहा है क्योंकि पानी तपे हुए को स्निग्ध कर देता है अर्थात जो कठोर है, उसे मुलायम कर देता है । प्यास से बेहाल हुए इंसान को जब पानी उसके अधरों पर दिया जाता है तो उसके मुंह से फिर आवाज निकलती है। अर्थात प्यासे को पानी पिलाने से उसे राहत मिलती है और उसे चेन का एहसास होता है। यदि पानी में तेज बहाव भी आ जाता है, तो वह काई के समान फटता नहीं है। कई का अर्थ है, शांत जल में या ठहरे हुए जल में हरे रंग की जो परत बैठ जाती है इसलिए कवि ने कहा है कि पानी कभी काई -सा फटता नहीं है और न ही रोटी के लालच में तोते सा रट ता है इसलिए मनुष्य को भी प्राणी के समान ही बनना चाहिए क्योंकि पानी का मार्ग कभी रुकता नहीं है वह हमेशा दूसरे के परोपकार के लिए ही बहता रहता है।

शब्दार्थ-

तपित-तापा हुआ

स्निगध-चिकना,ठंढा

बैन- बोल

मिलते हैं अगले पद के अर्थ के साथ अगले दिन।

छात्र कार्य-

प्रस्तुत भावार्थ को उत्तरपुस्तिका में लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद
~~~~~~~~~~